शिव अवतरण

ओमशान्ति मीडिया

महाशिवरात्रि विशेषांक

काल चक्र की अंतिम वेला

जिसे आप तलाश रहे हैं वो ही आकर कह रहा है, तुमने मुझे पहाड़ों में ढूंढ़ा, कंदराओं में ढूंढ़ा, मंदिरों में तलाशा, चारो धाम की यात्रा भी की, फिर भी मुझे नहीं ढूंढ़ पाये। ढूंढ़ भी कैसे पाते, जो खुद को ही भूला हुआ हो, वो खुदा को कैसे जान पायेगा! जब खुद की ही आँखें बंद हैं तो मुझे देख भी कैसे पायेंगे! अरे! ये तो सुना था कि शिव जयंती पर ही परमात्मा का दिव्य अवतरण होता, इसी यादगार शिव जयंती के महान पर्व पर ही मैं इस धरा पर आकर आपको ज्ञान का प्रकाश देकर जगाता और मैं खुद कहता कि तुम मेरे हो, मैं तुम्हारा हूँ। तो जागो, मुझे जानो, पहचानो, इस समय मैं आया हूँ। आप सभी को मुक्ति देने, जीवन को खुशहाल बनाने की तरकीब बताने। शिवजयंती के इस महान पर्व का इंतज़ार अब पूरा हुआ। क्यों यात्राएं करके खुद को थकाते हो। अरे! सुकून भरी ज़िन्दगी जीयो ना। ऐसी सुकून भरी ज़िन्दगी देने के लिए एक नई दुनिया का नवनिर्माण अब अंतिम चरण पर है। तो देर ना करो, चरण बढ़ाओ और हमारे गुणों को आचरण में धारण करो...

ज़िन्दगी के साज़ को आवाज़ देने के लिए एक परा व सुखकारी कलाकार की ज़रूरत है। एक ऐसी अदाकारी जहाँ सब कुछ थम जाए, बस एक निर्वाण की स्थिति हो, जिसमें से निकलने का हमारा बिल्कुल भी मन ना हो, अगर निकले तो उसी में बार-बार जाने का मन करे। सभी को ऐसी ही ज़िन्दगी की तलाश है जहाँ काया नहीं, माया नहीं, बस मैं हो... बस...मैं! ज़िन्दगी के सेतु को बनाने वाले का इंतज़ार हम कब तक करेंगे। हे हमारे जगत के तारणहार आ जाओ, बस आ जाओ।

आप इस दृश्य को ज़रा ध्यान से देखिए, इसमें आपको नज़र क्या आ रहा! लगता नहीं है कि सभी एक मुद्रा में, एकटक किसी को निहार रहे, किसी की बाट जोह रहे या फिर किसी का इंतज़ार कर रहे हैं। काल चक्र की अंतिम वेला, बस घड़ी की सुई मिलने ही वाली है, सब कुछ बदलने ही वाला है। समय की धूरी पर खरा उतरना हमारा काम है, और हम हैं कि पता नहीं कहाँ खोए पड़े हैं।

अरे मानव! भोर भई कि भई, अब कब तक सोओगे! बहुत सुनहरे भविष्य को दिखाने वाला कब से कह रहा कि, हम तो दिए ही जा रहे हैं, आप ले ही नहीं पा रहे, क्योंकि आप अपनी ही उलझनों में उलझे हुए हैं। उलझनों का अंत हो सकता है, यदि आप चाहें तो। क्योंकि आराम की ज़िन्दगी गुज़र बसर तब होगी जब हम उसे जानेंगे, पहचानेंगे, मानेंगे, उसकी धार में बहेंगे। कई मानवमात्र सिर्फ इसी सोच में हैं, कुछ नहीं बदलने वाला, सब ऐसे ही चलने वाला, नहीं! बदल चुका है, हम आपको उदाहरण दिखा सकते हैं, परन्तु उन उदाहरणों को देखने के लिए भी तो समय निकालना पड़ेगा ना! देखना सब कुछ चाहते हो, और आँखें खोलना नहीं चाहते! अरे प्यारों! अब तो जागो, समय को पहचानो कि क्या हो रहा है...? जिसे आप खोज रहे हैं वो ही आकर कह रहा है, तुमने मुझे पहाड़ों में ढूंढ़ा, कंदराओं में ढूंढ़ा, मंदिरों में ढूंढ़ा, चारो धाम की यात्रा की, फिर भी मुझे नहीं खोज पाये। खोज भी कैसे पाते, जो खुद को ही भूला हुआ हो, वो खुदा को कैसे जान पायेगा! जब खुद की ही आँखें बंद हैं तो मुझे देख भी कैसे पायेंगे! अरे! ये तो सुना था कि शिव जयंती पर ही परमात्मा का दिव्य अवतरण होता, इसी यादगार शिव जयंती के महान पर्व पर ही मैं इस धरा पर आकर आपको ज्ञान का प्रकाश देकर जगाता और मैं खुद कहता कि तुम मेरे हो, मैं तुम्हारा हूँ। तो जागो, जानो, पहचानो, इस समय मैं आया हूँ आपको इस उलझी ज़िन्दगी से मुक्त कराने। अब काल कंटक, दु:ख हर्ता आया है दु:ख हरने और जहाँ ज़िन्दगी सुकून, चैन व खुशियों भरी सुखदायी हो, ऐसी दुनिया बनाने। अब दु:ख के बादल छटकर हो रहा है सुख का आगाज़, बस उठो, भर लो झोली और चलो अपनी उस दुनिया में...

शुभकामना संदेश

दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

विश्व में सभी को जिस सुख शांति आनंद की तलाश है, उसका आधार ज्ञान है, और ज्ञान देने वाला ज्ञान दाता परमपिता परमात्मा निराकार शिव हैं। जब हमारे अंदर ज्ञान होगा तो हम अपने आपको ज्ञान के आधार से हर समय खुश व शांत रख सकते हैं। हमारे दिल को चैन व आराम देने के लिए दिलाराम परमात्मा शिव अब इस धरा पर अवतरित हो चुके हैं। हम उनसे असीम सुख ले रहे हैं। मैं चाहती हूँ कि सभी उस दिलाराम परमात्मा का सुख लें। अब वो सुनहरी घड़ियाँ हम सबकी नज़रों के सामने आने ही वाली हैं, क्योंकि परमात्मा शिव के आगमन से नई दुनिया का आगमन निश्चित है। हमारे आत्मिक पिता शिव का अवतरण हो चुका है यह संदेश जन-जन तक पहुँच जाये और हर आत्मा सुख-शांति-पवित्रता का वर्षा ले ले यही महा शिवजयंती के अवसर पर हमारी शुभ भावना है। इन्हीं शुभ आशाओं के साथ शिवजयंती पर्व की कोटी-कोटी व हार्दिक शुभकामनाएँ।

योग से ही सम्पूर्ण परिवर्तन संभव

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

बढ़ता तनाव, उससे होने वाले प्रभाव को कोई भी अनदेखा नहीं कर सकता। हमारा शरीर सम्पूर्ण प्रकृति को दर्शाता है। जब हमारी प्रकृति ही बदल जायेगी तो उससे हम कितने दिन तक चल पायेंगे। आज हमारा इंद्रियों पर संयम नहीं है। सम्पूर्ण प्रकृति का नियंत्रण हम सब कर सकते हैं, किंतु इसके लिए स्वयं को समझना होगा। समझने के लिए अपने को समर्पित करना होगा, उस आस्था में, विश्वास में जो ईश्वर के साथ ही हो सकता है। अरे! शरीर तो एक साधन है परमशक्ति को अनुभव करने का, उसी को आप असंयमित होकर नष्ट कर रहे हैं। परमात्मा से योग हमारी शारीरिक, मानसिक क्षमता को बढ़ाता है, हमारी विशेषताओं को विकसित करता है। बस इसके लिए सत्य ज्ञान की आवश्यकता है। अब हमारे पास ना ही ज्ञान है, ना अनुभव, इसलिए कठिन लगता है। **अरे ! यह बहुत ही सरल है, जैसे बीज में वटवृक्ष है, वैसे ही हमारे अंदर नर से नारायण बनने की असीम क्षमता है। परमात्मा से योग ही हमें नर से नारायण बना देगा, और वह संभव होगा राजयोग से।**

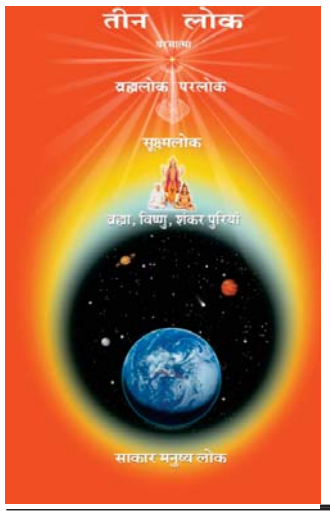

अपने परमपिता रहते परमधाम में

शिव परमात्मा सर्व का रचयिता है जिसे त्रिमूर्ति, तीनों लोकों का मालिक, त्रिलोकीनाथ और तीनों कालों को जानने वाला त्रिकालदर्शी कहते हैं। वो सर्व आत्माओं का पिता है। उसका रूप ज्योतिर्बिन्दु है, और वो परमधाम निवासी है। शिव का अर्थ है कल्याणकारी। परमात्मा निराकार है, इसका अर्थ ये नहीं कि उसका कोई आकार नहीं है, बल्कि उसका कोई शरीर नहीं है। आकार का अर्थ स्थूल आँखों से न दिखने वाला सूक्ष्म ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप है।

हम जाने अनजाने अपना हाथ अथवा मुख ऊपर की ओर उठाते हैं, क्योंकि यह स्मृति परमपिता परमात्मा की है जो ऊपर परमधाम में निवास करते हैं। वो देवताओं के सूक्ष्मलोक से भी ऊपर एक कर्मातीत रूप से फैला तेज़ सुनहरे लाल रंग का प्रकाश है जिसको अखण्ड ज्योति महतत्व अथवा ब्रह्म-तत्व कहते हैं। यह पाँच प्राकृतिक तत्वों से अति सूक्ष्म है। इसका साक्षात्कार दिव्य-चक्षु द्वारा ही हो सकता है। इस स्थान को ब्रह्मलोक, परमधाम, शांतिधाम, निर्वाणधाम अथवा शिवपुरी कहा जाता है। वे वहाँ वास करते हैं।